CIJ-01

फलित ज्योतिष का सैद्धान्तिक ज्ञान

विवरणिका

इकाई सं.	इकाई का नाम	पृ.सं.
इकाई - 1	ज्यो तिष शास्त्रि का उद्भव एवं विकास – प्राचीन काल, मध्य,काल एवं आधुनिक काल में ज्यो ातिष शास्त्रा का परिचय	4
इकाई - 2	फलित ज्योलतिष – संज्ञा प्रकरण के अन्तvर्गत, नक्षत्र, राशि, वार, योग, करण ग्रहों का परिचय	15
इकाई - 3	कुण्ड ली परिचयलग्नाचदि द्वादश भावों के अन्तरर्गत भावों की संज्ञा, कारक ग्रहों की नैसर्गिक मित्रता, शत्रु, उच्चत–नीच, मूल त्रिकोणादि ज्ञान,ग्रहों कारकत्वम्एवं दृष्टि विचार	56
इकाई - 4	लग्न का सामान्य फल, ग्रहों का शुभाशुभत्व एवं अरिष्ट् विचार	72
इकाई - 5	भावफल	82
इकाई - 6	नाभसादि योग	104
इकाई - 7	आजीविका एवं राजयोगविचार	127
इकाई - 8	बालारिष्ट एवं आयुविचार	153
इकाई - 9	दशाज्ञान:- दशाओं का शुभाशुभ फल, महादशा, अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा ज्ञान	179
इकाई - 10	मारक ग्रह निर्णय	212
इकाई - 11	शुभाशुभ मुहूर्त निर्णय	2225
इकाई - 12	विवाह, यात्रा मुहूर्त्त	259
इकाई - 13	'शंकुन ज्योततिष'	316